**International Journal of Humanities and Social Science Research**
**ISSN: 2455-2070**
**Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.socialsciencejournal.in**
**Volume 4; Issue 3; May 2018; Page No. 17-18**

# रामचरितमानस के संदर्भ में : सामाजिक नीति

**डॉ० पी० के० शर्मा**
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, पी० सी० बागला (पी० जी०) कालेज, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत।

## प्रस्तावना

सामाजिक पुनर्गठन एवं विकास हेतु मानव सदैव से तार्किक आधार पर निर्धारित मान्यताओं जिन्हें नीति की संज्ञा से अभिहित किया जाता रहा है, का प्रयोग करता है जिससे सामाजिक जीवन सुखी व समृद्ध हो सके। समाज में समरूपता के विकास हेतु सामाजिक नीति सदैव से अपेक्षित रही है। सामाजिक नीति यद्यपि बहतु सरल लगती हैं परन्तु यह एक जटिल अवधारणा है जो किसी भी समाज के सामाजिक मूल्यों एवं अपेक्षाओं के अनुरूप स्वरूप ग्रहण करती हैं। सामान्यतः सामाजिक नीति का सम्बन्ध जनकल्याण प्रकाशन, विशेषकर राज्य तथा स्थानीय सत्ताओं की विशिष्ट सेवाओं के विकास एवं प्रबन्धन यथा– स्वास्थ्य, शिक्षा, कल्याण तथा सामाजिक सुरक्षा सेवाओं, विशिष्ट समस्याओं के समाधान तथा ज्ञात और स्वीकृत सामाजिक उद्देश्यों के कार्यान्वयन से है।[1]

सामाजिक नीति इस प्रकार जनकल्याण एवं सामाजिक सुरक्षा के लक्ष्य की ओर उन्मुख रहकर सामाजिक विकास का पथ प्रशस्त करती है।

प्रोफेसर टी. मार्शल के अनुसार ''सामाजिक नीति नागरिकों के कल्याण के कार्यान्वयन हेतु सरकारी नीति है– सेवाओं या आय की सुविधाऐं प्रदान करने हेतु, जिसका केन्द्रीय बिन्दु है– सामाजिक बीमा, जन सहायता, आवास नीति, शिक्षा तथा अपराधों का समाधान।''[2] इस प्रकार व्यक्ति और समाज के व्यापक हितों–उनके सर्वांगीण विकास एवं सुरक्षा को अपने में समाहित करती है– शासन के दायित्व का बोध करती है। यथार्थतः सामाजिक नीति केवल राज्य की नीति का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती अपितु उसमें संस्थाओं की नीतियों जो मानव जीवन को प्रभावित करती है, शामिल रहती है– यद्यपि आज राज्य के दायित्व वृद्धि के कारण सामाजिक नीति की अवधारणा सीमित अर्थ में ही अधिक प्रयुक्त होती है। समाज हित के लिए देश, काल एवं संस्कृति के अनुरूप आचार व्यवहार, विकास एवं प्रबन्ध की विधि है, एक शासकीय विधान है। सामाजिक नीति सदैव एक सी नहीं रहती, परिस्थितियोंके अनुरूप स्वरूप ग्रहण करती है, परिवर्तित होती है तथा सामाजिक अनुकूलन एवं व्यवस्था में सहायक होती है। वे सभी तार्किक विधियाँ जिनके आधार पर समाज में परिवर्तन आता है, सामाजिक नीति कहलाती है। समाज कल्याण एवं सामाजिक सुरक्षा– सामाजिक परिवर्तन एवं प्रगति हेतु जो तार्किक तरीके प्रयुक्त होते हैं उन्हें ही हम सामाजिक नीति की संज्ञा से अभिहित करते हैं।

## सामाजिक नीति का उद्देश्य

सामाजिक नीति निरूउद्देश्य नहीं होती। मानव एवं समाज के हित से सम्बन्धित होने एवं तदर्थ कार्य योजना का निर्माण करने तथा उनके कार्यान्वयन को तर्कपूर्ण ढंग प्रदान करने हेतु नीति का निर्माण किया जाता है, एतदर्थ वह बहुआयामी व बहुउद्देशीय होती है। सामान्यतः उसके उद्देश्यों का निरूपण इस प्रकार सम्भव है–

- सामाजिक समस्याओं का निवारण
- सामाजिक नियोजन को निश्चित दिशा व आधार प्रदान करना।
- जनकल्याणकारी योजनाओं के आधार पर समाज सुधार करना।
- साधनों को संगठित कर उनके लक्ष्योन्मुखी प्रयोग द्वारा परिवर्तन।
- सामाजिक संरचना में व्याप्त असन्तुलन को दूरकर स्थिरता प्रदान करना।

देश, काल, परिस्थिति सामाजिक नीति के उद्देश्य निरूपण में सहायक होती है– एतदर्थ सामान्य उद्देश्य होते हुए भी सामाजिक नीति के उद्देश्यों में वैशिष्टय झलकता है फिर भी सामान्यतः सामाजिक नीति का उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था और प्रगति के लिए उपलब्ध साध्य और साधनों में समन्वय स्थापित कर समाज कल्याण को प्रोत्साहित करना है। सामजिक नीति का लक्ष्य समाज में व्याप्त समस्याओं, कुरीतियों, आदि का निवारण कर उसको संगठित व व्यवस्थित बनाए रखना है। नियोजित परिवर्तन द्वारा सामाजिक प्रगति का पथ प्रशस्त करना है। एक विकासशील सामाजिक नीति एक निश्चित विधान के अंतर्गत निर्धनता एवं मलीनता के उन्मूलन, समान शैक्षणिक अवसर, जाति, वर्ण एवं सम्प्रदायों में सौहार्द, सामाजिक एकीकरण, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं एवं सामाजिक सुरक्षा को अपने लक्ष्य में समाहित कर जनकल्याणकारी नीति के रूप में अस्तित्व ग्रहण करती हैं।

एक समाज वैज्ञानिक का दायित्व यह ज्ञात करना है कि कार्यरत सामाजिक नीति के उद्देश्य क्या हैं ? पीटर टाउनसेन्ड इस तथ्य को प्रतिपादित करते हैं कि यह ज्ञात किया जा सकता है कि सामाजिक नीति– गरीबी उन्मूलन, गन्दगी निवारण, समान शैक्षणिक सुविधाऐं, प्रजातियों में सौहार्द, सामुदायिक एकीकरण, आरोग्य एवं रोग नियंत्रण, कानून का समान लाभ आदि प्रदान करने में सहायक हो रही है या नहीं। वे उद्देश्यों को किस रूप में ग्रहण करते हैं तथा व्याख्या एवं विश्लेषण करते हैं।

रामचरितमानस से यह विदित होता है कि रामराजकालीन समाज नीति जनकल्याणोन्मुखी है तथा जनअपेक्षाओं के अनुरूप है लक्ष्योन्मुखी है। सामाजिक समस्याओं का निवारण की ओर उन्मुख है। साथ ही संस्थागत आदर्शों को गतिशील बनाए रखना उसका लक्ष्य है। जिससे व्यक्ति और समाज दोनों के हितों को संरक्षण प्राप्त होता है। साध्य और साधन के अनुरूप रहकर सामाजिक व्यवस्था एवं प्रगति को आधार प्रदान करना उसका लक्ष्य है जो वर्णित तथ्यों से स्पष्ट है।

## सामाजिक नीति के स्रोत

सामाजिक नीति किसी सामाजिक लक्ष्य की पूर्ति हेतु कार्ययोजना की एक तर्कपूर्ण विधि है, वह किसी तत्कालीन या दीर्घकालीन लक्ष्य

की प्राप्ति हेतु निर्मित होती है। नीति का प्रमुख स्रोत समाज है। नीति का निर्माण सामाजिक अनुभव, सांस्कृतिक आदर्श व परम्पराओं, समाज वैज्ञानिक सिद्धान्त, शोध अध्ययन, धार्मिकग्रन्थ साहित्य आदि के आधार पर सम्भव है। सामाजिक नीति का निर्माण सामाजिक समस्याओं के अनुरूप होता है। नेतृत्व, राज्य, प्रशासनतन्त्र, समाज वैज्ञानिकता, साहित्यकार, सुधारक आदि सामाजिक नीति के निर्माण के समय सामाजिक आदर्शों व मूल्यों, परम्पराओं, संस्कृति, अनुभव आदि को ध्यान में रखकर सामाजिक नीति का निर्माण करते हैं ताकि वह जनता को ग्राह्य हो सके तथा लक्ष्यपूर्ति में सहायक भी।

रामचरितमानस में सामाजिक नीति निर्याणक राज्य व उसका नेतृत्व है तथा सामाजिक पुनर्गठन हेतु जिस नीति का निर्माण करते हैं उसका प्रमुख स्रोत वेद–पुराण एवं धार्मिक मान्यताऐं है। काकभुशुण्डि जी का गरूड से यह कहना–

पन्नगरि असि नीति श्रुति संमत सज्जन कहहि।[5]

वेद सम्मत तथा सज्जन पुरूषों की सम्मति नीति निर्धारण का अधार है। शिवजी के अनुसार वहीं व्यक्ति नीतिज्ञ है–

नीति निुपन सोई परम सयाना। श्रुति सिद्धान्त नीति तेहि जाना।।[6]

अर्थात् वही नीतिज्ञ या नीति निपुण है जो वेदों के सिद्धान्तों का भली प्रकार से ज्ञाता है – चाहे वह कवि हो या नेतृत्व। विभीषण भी नीति की बात करते समय प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों – वेद, पुराणसम्मत मान्यताओं को आधार मानते हैं–

बुध पुरान श्रुति सम्मत बानी । कही विभीषन नीति बखानी।।[7]

स्पष्टतः सामाजिक नीति वेद, पुराण, ऋषियों के अनुभवों से सामंजस्य प्राप्त कर अस्तित्व ग्रहण करती है। भारद्वाज मुनि ने याज्ञवल्क्य जी से कहे ये शब्द भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं–

संत कहहिं असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव।[8]

कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति होती है– वेद की इस नीति का अनुसरण प्रायः सभी प्राणी करते हैं– राजा दशरथ की धारणा भी यही है कि जो कर्म करता है, वहीं फल पाता है–

करइ जो करम पाव फल सोई। निगम नीति असि कह सबु कोई।।[9]

तथ्य इस ओर संकेत करते हैं कि कवि तुलसी की सामाजिक नीति लोकनीति है जिसका स्रोत जहाँ ऋषि–मुनियों द्वारा निर्धारित जीवन के विविध पक्षों से सम्बन्धित व्यवहार प्रतिमान हैं जो वेद, पुराण आदि ग्रन्थों में उल्लिखित हैं। वर्ण, परिवार, विवाह, शिक्षा, राजनीति, आर्थिक क्रियाऐं, धर्म आदि के संरचनात्मक व प्रकार्यात्मक पक्ष को संतुलित बनाए रखने हेतु निर्धारित प्रतिमान व मूल्य हैं जो नीति निर्धारण को दिशा निर्देश व आधार प्रदान करते हैं व्यक्ति और समाज को संगठित व व्यवस्थित बनाए रखने हेतु ही सामाजिक प्रगति एवं विकास के मानदण्डों के रूप में।

सामाजिक नीति के अस्तित्व, निर्माण व लक्ष्य निर्धारण में जहॉ समाज में विद्यमान समस्याऐं हैं वहाँ उनके निवारणार्थ नीति का स्रोत वेद–पुराण अनुभव आदि हैं।

## निष्कर्ष

- फलप्रद सामाजिक नीति का आधार सामाजिक मूल्य, परम्परा एवं जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप होना है।
- प्रजातान्त्रिक सामाजिक नीति ही जन आकांक्षाओं का आइना बन शासक व प्रशासक एवं जनता के समन्वित प्रयास एवं सहभागिता निश्चित करने में सहायता करती हैं।
- सामाजिक नीति की सफलता उसके कुशल सम्प्रेषण एवं जन सहभागिता पर निर्भर करती है।
- सामाजिक नीति की सार्थकता सामाजिक नियोजन हेतु उसकी परिणति है।

## सन्दर्भ


1. Policy Concerned with the public administration of welfare, that is, the developement and management of specific services of the state and of social authorities, such as heal it, education, welfare and social security services, foremedy particular social problems or pursue social objectives which are generally perceived and agreed as such Peter Townsend : Sociology and social policy, penguin books Ltd, London, 1975 P-2.
2. The Policy of government with regard of action having a direct impact on the welfare of citizens, by provinding them with services or income- The central core of which include social insurance public (or national) assistance, housing policy education and the treatment of crime. T.H. Marshall : Social policy in the Twentieth Century, 1967 P-6.
3. In reaction to particular measures, he can show what objectivves, like the abolition of poverty, abolition of squalor, equality of educational opportunity, harmony between races, integration of the community, restoration of health and prevention of disease and equality of treatment before the law.... Peter Townsend : Sociology and Social Policy, P - 9,
4. He can show how ministers civil servents, members of the probessions and other interpret general objectives in their specific decisions and attentions Ibid, P-9
5. उ0का0दो0 95 (क)
6. उ0का0 127/3
7. सु0का0 41/3
8. बा0का0दो0 45
9. बा0का0 77/8